डा. गायत्री प्रियदर्शनी

रघुवीर नगर, बदायूं,
243601
मो.8923591758

फूल चम्पा

उदग्र हरी चिकने पत्तों वाली
उद्धत फूलों वाली
व्याकुल बांहें बार-बार
नोचे झिंझोड़े
मसले कुचले जाने पर भी
फिर - फिर
उठती हुई
बेचैन जीने की जिद से भरपूर
सूरज से आंखें मिलाती
तेरी पुरकशिश आँखें
कैसे घुल-मिल गई हैं
मेरे सपनों की राख-भरी
आँखों से
अपने हरेपन मे सँजोए
फिर - फिर से
अपने होने
अपने से उगने की
तेरी इच्छा
दहका रही है
मेरी भी
राख के ढेर में दबी
सपनों की आग को।

कितना अधूरा सा

कितना अधूरा सा है
प्यास का यह सफर
जहां संग है पर साथ नहीं है
देह है पर मन नहीं।
थकी हुई पलकों में
चुभती हैं
रेतीले सपनों की किरचें
फिर भी यह बावला मन
न जाने क्यों
बार - बार
डूबना चाहता है
सुर्ख गुलमुहर की आंच सी तप्त
जुड़ी हुई हथेलियों की
आत्मीय दहक में!

समय की शाखों से

टपक रहा है
समय की शाखों से
घना - घना
कोहरा
परतीली धुन्ध से
झांक रहा है
फीका सा
मटमैला चाँद
डूबता जा रहा है
सन्नाटे में
रात का शहर।
होने लगी हैं
घरों में कैद
जिन्दगी की बेचैनियां
थम गया है
थोड़ी देर को
पहियों पर
भागता - दौड़ता
रात का शहर।
फैलने लगी हैं
सड़कों पर
रात की बदमाशियाँ
और
जाग रही हैं वे
हड्डियों को चीरती
सनसनाती हवाओं में
मेकअप से लिपी - पुती
गठरी बनी हुई
पतली गली की
खंडित मूर्तियाँ
सड़क पर जलते
लैंप पोस्ट की तरह
अभिशप्त
इन्तजार में।